शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

अध्यात्म का आशय

विनोबा

अध्यात्म उसको कहते हैं, जिसके द्वारा पूरे ब्रह्माण्ड को अपने में पहचान सकते हैं। ब्रहमांड के स्वरूप का और उसके कर्ता का पता लगाना संभव नहीं है। वह अत्यंत व्यापक और सूक्ष्म है। फिर भी उसे पहचानने का प्रयत्न किया जा सकता है। प्रयत्न बाहर से भी किया जा सकता है और अंतर्निरीक्षण से भी किया जा सकता है। फिजिक्स विश्व का बाह्य रूप समझने में मदद करता है। मेटाफिजिक्स (तत्व-मीमांसा) विश्व का आंतरिक रूप थोड़ा-सा समझता है। लेकिन इन शास्त्रों से पूर्ण ज्ञान नहीं हो सकता। मिसाल के तौर पर, मनुष्य चंद्रमा पर पंहुच जाएगा। लेकिन वह बिलकुल मामूली बात मानी जायेगी। आकाश में इतने सितारे, नक्षत्र, ग्रह हैं कि उन सब पर पंहुचना असंभव है। कुछ ग्रह तो इतने दूर हैं कि उनके प्रकाश किरण भी अभी तक धरती पर नहीं पहुंचे हैं। इसका अर्थ यह है कि विज्ञान के द्वारा हुई खोजों से यानी बाह्य विश्व में हुई खोजों से ब्रह्माण्ड के और उसके कर्ता के विषय में बहुत कुछ नहीं पा सकेंगे। मैं कई बार समझाता हूँ कि शरीर के अवयवों में जो व्यवस्था है, वैसी व्यवस्था हमें समाज रचना में लानी है। यह इसलिए समझाता हूँ कि जो कुछ सृष्टि में है, वही पिंड में है। जो पिंड में है, वही ब्रह्माण्ड में है, परन्तु वह बहुत दूर है इतना दूर कि उसको समझना आसान नहीं है। और उसका कर्ता कौन, यह जानना तथा उसको प्राप्त करना और भी अधिक दुर्लभ है। इसलिए उसको समझने का आसान तरीका है, उसे पिंड में जानना। यही अध्यात्म है। पिंड में देखना यानी अन्दर देखना और सृष्टि में देखना यानी बाहार देखना। सृष्टि में देखने और सुनने के लिए बहुत सारी सहूलियतें हैं। कान हैं तो सुन सकते हैं, आँख है तो सृष्टि का रूप देख सकते हैं। मदद में बहुत सारे वैज्ञानिक उपकरण भी उपलब्ध हैं। ऐसी सहूलियतें पिंड के अन्दर देखने के लिए नहीं हैं अगर हम पिंड को जान सकें तो बहुत सारा काम हो जाएगा। मनुष्य की मुख्य पहचान यह है कि मनुष्य को ज्ञान हो सकता है कि 'मैं शरीर से अलग हूँ।' इसलिए मनुष्य का मुख्य लक्षण यही है कि वह अपने को शरीर से अलग जान सकता है। मनुष्य में ज्ञान-तृष्णा होती है। वह निरंतर कुछ-न-कुछ विशाल कल्पनाएँ करता रहता है। दिल की उड़ान, ऊंचे विचार, ऊंचा ध्येय - इसकी आकांक्षा रखता है। उसके लिए जितनी भी कोशिश की जरूरत हो, मैं करूंगा, ऐसा विचार मनुष्य करता है, कर सकता है। मेरा मानना है कि मनुष्य का शारीरिक विकास उसकी ज्ञान तृष्णा के कारण ही हुआ है मनुष्य देह के आकर में यह संकेत रखा हुआ है कि उसे सृष्टि रूप में सजे-धजे ईश्वर का ज्ञान ग्रहण करना चाहिए। विचार ऊंचे होने चाहिए। चिंतन के आकाश में उच्च चिंतन करते रहें, आकाश ब्रह्म की उपासना करें, सेवा के द्वारा पृथ्वी ब्रह्म की उपासना करें, तब मनुष्य जीवन का रहस्य खुलता जाएगा। (विनोबा साहित्य : खंड 14)